स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड - डॉ० मुन्ना साह
(पंचम पत्र - हिन्दी कथा एवं नाट्य साहित्य) हिन्दी विभाग

प्रेमचंद

हिन्दी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का कद इतना ऊँचा है कि उनके समकालीन एवं बाद के रचनाकार अच्छी रचनाएँ करनेके बावजूद उनकी बराबरी नहीं कर पाए। धनपत राय, 'नवाबराय' के नाम से लिखते थे। 'सोजे वतन' को जब अंग्रेजी सत्ता ने जलाया और उन पर बंदिशें लगा दी। उस समय उर्दू पत्रिका 'जमाना' के संपादक - मुंशी दयानारायण निगम ने 'नवाब राय' को 'प्रेमचंद' नाम दिया। फिर 'प्रेमचंद' का दौर शुरू हुआ तो बढ़ता ही चला गया। स्वयं के बारे में मुंशी जी लिखते हैं कि - "मैं एक मजदूर हूँ। जिस दिन कुछ लिख न लूँ, उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक नहीं।" ऐसे महान साहित्यकार थे प्रेमचंद।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' का पात्र 'हामिद' हो या 'पुस की रात' का 'हल्कू' दोनों का चरित्र परिस्थितियों के आवरण में जीवंत हो उठता है। 'कफन', 'पंचपरमेश्वर', 'नमक का दरोगा' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। कहानीकार के साथ-साथ उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद ने तत्कालीन भारतीय समाज को पैनी दृष्टि से देखा और एक आलोचक की भाँति 'गबन', 'गोदान', 'कर्मभूमि' जैसे उपन्यासों के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग की तस्वीर स्पष्ट कर दिया। प्रेमचंद भाषा के स्तर पर बिल्कुल सहज नजर आते हैं। दलितों की मुक्ति व्यग्रता तथा संपन्न वर्ग की राष्ट्रवादी भूमिका को अनदेखा नही करते। देश उद्धार के संबंध में भी वे लिखते हैं कि "देश का उद्धार विलासियों द्वारा नहीं हो सकता, उसके लिए सच्चा त्यागी होना आवश्यक है।"

मुंशी प्रेमचंद की प्रासंगिकता साहित्य और समाज के लिए अनवरत बनी रहेगी।